17 अगस्त 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख. शान्ति. समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 10 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में -

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा दिनांक 2 से 11 अगस्त 2019 तक 42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्रीमती सुनीता-प्रेमचंदजी, तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा के करकमलों से हुआ। सभा की अध्यक्षता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में **श्री सुभाषजी गर्ग** (मंत्री - तकनीकी शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार), चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेद एवं चिकित्सा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं (ई.एस.आई) एवं सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग - राजस्थान सरकार) उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा आदि अनेक विद्वत्गण तथा श्री महेन्द्रजी पाटनी जयपुर, श्री सुधांशुजी कासलीवाल एडवोकेट जयपुर, श्री अनिलजी जैन (रिटा. एसपी), श्री टी.सी. जैन (भरतपुरवाले) जयपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

मंचासीन समस्त अतिथियों का सम्मान श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने तिलक लगाकर एवं माल्यार्पणकर किया।

महाविद्यालय हेतु अभूतपूर्व योगदान के लिये राजस्थान राज्य मंत्री श्री सुभाषजी गर्ग का पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा विशेष सम्मान किया गया, जिसमें ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका द्वारा तिलक लगाकर साफा पहनाया गया डॉ. भारिल्ल द्वारा शॉल ओढायी गयी।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री किरणभाई गाला परिवार मुम्बई, मंच का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर एवं ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर ने किया। इसके अतिरिक्त आचार्य कुन्दकुन्द का चित्र अनावरण श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत, आचार्य धरसेन का चित्र अनावरण श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, पण्डित टोडरमलजी का चित्र अनावरण श्री शांतिलालजी (सी.ए.) विपिनजी गंगवाल जयपुर एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का चित्र अनावरण अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ द्वारा किया गया।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता-प्रेमचंदजी, तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा एवं आमंत्रणकर्ता श्री महेन्द्रकुमारजी राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री साकेतजी जैन सिंगापुर थे। शिविर में आयोजित श्री अष्टपाहुड महामंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, श्रीमती सोनल-भरतभाई मेहता सूरत, श्री वीरेशजी सम्यक्जी कासलीवाल सूरत, श्रीमती लता-महावीरप्रसादजी सरावगी कलकत्ता एवं श्री सुनील शास्त्री-संचित शास्त्री ग्वालियर थे।

इस अवसर पर श्री प्रेमचंदजी बजाज ने पूज्य गुरुदेवश्री के उपकार एवं गोदिका परिवार के योगदान का स्मरण करते हुए डॉ. भारिल्लजी के मार्गदर्शन में टोडरमल स्मारक द्वारा देश-विदेश में किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार को सराहा। श्री निहालचंदजी जैन ने भी स्मारक ट्रस्ट एवं भारिल्लजी का उपकार मानते हुए सभी को शिविर में तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लेने की प्रेरणा दी। (शेष पृष्ठ 3 पर...)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर से रविवार 20 अक्टूबर, 2019 तक)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित उक्त शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया जायेगा। अतः अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक स्वर्ण अवसर होगा।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

संपर्क - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

पंचकल्याणक : पाषाण से परमात्मा बनने की प्रक्रिया

3

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यह प्रश्न विचारणीय है। एतदर्थ हमें परिग्रह का स्वरूप समझना होगा; क्योंकि परिग्रह को परिभाषित किये बिना अपरिग्रह का स्वरूप समझा नहीं जा सकता। अत: पहले परिग्रह की बात करते हैं।

जिनागम में परिग्रह को सबसे बड़ा पाप और अपरिग्रह को सबसे बड़ा धर्म कहा गया है। दशलक्षण पूजा में परिग्रह के 24 भेद किये जाते हैं, उनमें 14 अन्तरंग परिग्रह हैं और 10 बहिरंग परिग्रह हैं- मूलपद्य इसप्रकार है –

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करे मुनिराजजी।
तृष्णा भाव उच्छेद, घटती जान घटाइए।।

उक्त पद्य में चार बातें कहीं हैं – **एक –** परिग्रह चौबीस प्रकार का है, **दूसरी –** इनका सम्पूर्ण त्याग साधु करते हैं और **तीसरी –** बहिरंग परिग्रह में तृष्णाभाव का त्याग (उच्छेद) ही वस्तुत: अपरिग्रह है और **चौथी –** गृहस्थों को भी यथाशक्ति इन बाह्य परिग्रहों का त्याग करना चाहिए।

आजकल जब भी परिग्रह की बात चलती है तो हम मात्र बहिरंग परिग्रह को ही परिग्रह मानते हैं, जो इसप्रकार हैं – (1) क्षेत्र (खेत), (2) वास्तु (मकान), (3) हिरण्य (चांदी), (4) सुवर्ण (सोना), (5) धन (रुपया-पैसा), (6) धान्य (अनाज), (7) दासी-दास, (8) कुप्य (बर्तन) 9. वस्त्र और 10. गाड़ी-घोड़ा आदि।

जरा सोचिए क्या इसी परिग्रह को सबसे बड़ा पाप कहा होगा ? जबकि ये सब तो पुण्य के फल हैं, बड़े सौभाग्य से प्राप्त होते हैं और जिसके पास यह वैभव होता है, उसकी तो कवि ने यहाँ तक प्रशंसा की है –

यस्यास्ति वित्तं, स नर: कुलीन, सपण्डित: श्रुतवान गुणज्ञ:।
स एव वक्ता स च दर्शनीय, सर्वे गुण: कांचनमाश्रयन्ति।।

यद्यपि कवि का यह कथन एक व्यंग्य है; पर सच भी यही है, क्योंकि यह सब वैभव पुण्य से प्राप्त हुआ है; मुफ्त में नहीं मिला है। जगत में ऐसा कौन है जो करोड़पति नहीं बनना चाहता; और प्रयत्न भी सभी करते ही हैं; पर बनते वही हैं जिनके भाग्य में होता है।''**भाग्यात् परं नैश ददाति किंचित्**''

इसे सिद्ध करने की जरूरत नहीं, यह बात बच्चा-बच्चा जानता है। मैंने एक आठ वर्ष के बच्चे से पूछा – ''बताओ! तुम्हारी कक्षा में जो 40 बालक हैं, उन सबकी शकल एक-सी है, अकल एक-सी है, पालकों की परिस्थितियाँ एक जैसी हैं, सबके उत्तर थे नहीं, नहीं, नहीं। एक गरीब के घर जन्मा और दूसरा अमीर के घर क्यों जन्मा ?''

उत्तर था –''पूर्वजन्म में जिसने जैसे पुण्य-पाप किये उसे वैसा ही फल मिला है; तुलसीदास ने साफ कहा है – **कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जे जस करे सो तस फल चाखा**''

अत: भाईसाहब पैसा पाप नहीं है, धन-दौलत पाप नहीं। ये तो पुण्य के फल हैं, किन्तु फिर भी इस बाह्य परिग्रह को पापों में क्यों गिना और परिग्रह को सबसे बड़ा पाप क्यों कहा? सोचा है कभी इस विषय पर ? यदि नहीं तो सुनिए।

''नि:सन्देह धन-दौलत आदि बाह्य परिग्रह पाप नहीं, बल्कि **इसमें मूर्च्छा होना परिग्रह पाप है। मूर्च्छा का अर्थ है ममत्व करना, एकत्व करना।** 'वैभव मेरा है, इसी से मैं बड़ा हूँ' – यह एकत्व-ममत्वबुद्धि ही सबसे बड़ा पाप है। इनका अनावश्यक संग्रह करना और प्राप्त भोगोपभोगों में तन्मय होना भी पापभाव है। यदि परिग्रह पाप होता तो सर्वाधिक परिग्रह वाले भरत चक्रवर्ती पुण्यात्मा और धर्मात्मा कैसे कहे जाते ? जबकि उन्हें **'घर में ही वैरागी'** कहा गया है। अत: वस्तुत: **वैभव में मूर्च्छा होना परिग्रह है।** (क्रमश:)

शोक समाचार

कोटा (राज.) निवासी श्री राकेशजी जैन पापड़ीवाल का दिनांक 15 जुलाई को 54 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शिविर के समग्र कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने प्रस्तुत की एवं पीयूषजी शास्त्री ने आभार प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल द्वारा उद्बोधन होने के पश्चात् सभा का समापन हुआ।

प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के '**प्रवचनसार (चरणानुयोगसूचक चूलिका)**' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा '**मतिज्ञान**' विषय पर प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें – जीवनपथ दर्शन विषय पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा, **मोक्षमार्गप्रकाशक (चौथा अधिकार)** विषय पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 73-74)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं **गुणस्थान विवेचन** पर डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रात: 5.30 से पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित निखिलजी मुम्बई द्वारा ली गई प्रौढ कक्षा के तत्काल बाद जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में प्रोजेक्टर द्वारा हुआ।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रतिदिन दो विद्वानों के प्रवचन का लाभ मिलता था, जिनमें डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अरुणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नीशूजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा चलाई गई।

शिविर में आयोजित 'श्री अष्टपाहुड महामंडल विधान' के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सहयोग से हुये।

शिविर के समापन समारोह में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी विद्वानों एवं साधर्मियों का आभार प्रदर्शन किया। शिविर में 25 विद्वानों के माध्यम से लगभग 1000 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। वाट्सअप के माध्यम से 1172 साधर्मियों ने प्रतिदिन प्रवचन व कक्षाओं का लाभ लिया। टोडरमल स्मारक के यू-ट्यूब चैनल पर 11 देशों में 1,15,511 व्यूज तथा 15188 घंटे शिविर के कार्यक्रम देखे गये। हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

विशेष गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 42वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 4 अगस्त को '**जैनदर्शन के रत्नद्वय – अनेकान्त-स्याद्वाद**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अरुणजी बण्ड जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा व पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद थे। इसके अतिरिक्त पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित राकेशजी दिल्ली, पण्डित अनिलजी जयपुर, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी सागर, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल मंचासीन थे। निर्णायक के रूप में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में स्वप्निल जैन सिवनी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम एवं अमन जैन आरोन व संयम जैन दिल्ली (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण शाश्वत जैन जयपुर (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अंकित जैन भगवां व आयुष जैन गौरझामर ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पुण्य स्मृति

(1) जयपुर निवासी स्व. श्री शांतिलालजी जैन अलवरवालों की प्रथम पुण्य स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) भीलवाड़ा निवासी स्व. श्री अभयकुमारजी अजमेरा की प्रथम पुण्य स्मृति (दिनांक 13 जुलाई) में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 अग. से 2 सित.	मुम्बई (अध्यात्म स्टडी सर्किल)	श्वेताम्बर पर्यूषण
3 से 12 सितम्बर	दिल्ली (विश्वास नगर)	दशलक्षण महापर्व
13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
1 से 3 नवम्बर	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
4 से 12 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

प्रवचन व कक्षाओं का लाभ प्रदान करते हुए विद्वत्गण

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ब्र. सुमतप्रकाशजी पं. अभयजी शास्त्री डॉ. शांतिजी पाटील डॉ. संजीवजी गोधा डॉ. प्रवीणजी शास्त्री

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ? (द्वितीय सूची)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 3 सितम्बर 2019 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 20 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 13 अगस्त 2019 तक हमारे पास 450 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 13 अगस्त 2019 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 385 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। पिछले अंक (2 अगस्त, 2019) में जिन विद्वानों का नाम निश्चित नहीं हुआ था उनकी सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वान : 1. **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** दिल्ली (विश्वासनगर), 2. **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** जयपुर, 3.**ब्र. यशपालजी जैन जयपुर :** घटप्रभा (कर्नाटक), 4. **ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना :** विदिशा (किला अन्दर), 5. **पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन :** सम्मेदशिखरजी, 6. **ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली :** सनावद पंच. प्रचार व प्रवचन, 7. **पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** हिम्मतनगर, 8. **पण्डित अभयकुमारजी देवलाली :** कोलकाता, 9. **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली :** सोनगढ, 10. **पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी :** अजमेर, 11. **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर :** सम्मेदशिखरजी, 12. **पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा :** राजकोट, 13. **पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद :** चैतन्यधाम, 14. **पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर :** कोटा (इन्द्रविहार), 15. **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा :** अहमदाबाद (वस्त्रापुर), 16. **संवेगी केशरीचंदजी धवल :** सहारनपुर, 17. **पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** राजकोट, 18. **डॉ. दीपकजी जैन जयपुर :** उज्जैन, 19. **पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** औरंगाबाद।

विदेश : 1. **वर्जीनिया :** ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली, 2.**लन्दन :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, 3. **न्यूजर्सी :** पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर कोटा, 4. **शिकागो :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, 5.**सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, 6. **दुबई :** डॉ. नीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा।

मध्यप्रदेश

विदिशा : ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. अमित भैया विदिशा, ब्र. निखिल भैया भायंदर, **उज्जैन :** डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' व विदुषी श्रुति शास्त्री, **सोनागिर :** डॉ. विनोदजी चिन्मय विदिशा, **दलपतपुर :** पण्डित अंकितजी शास्त्री भगवां, **शिवपुरी (परमागम मंदिर) :** पण्डित अनिलजी इंजी. इन्दौर, **इन्दौर (ओम विहार) :** पण्डित संयमजी शास्त्री मड़देवरा, **इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल, **धामनौद (इन्दौर) :** पण्डित अनिमेषजी शास्त्री राघौगढ, **बण्डा :** पण्डित रूपचंदजी बण्डा, **मगरौन :** पण्डित प्रासुकजी शास्त्री रानीताल, **कुचड़ौद :** पण्डित रितिकजी शास्त्री शाहगढ, **बदनावर :** पण्डित संयमजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी, **लुकवासा :** पण्डित अक्षतजी शास्त्री दलपतपुर, **बदरवास :** पण्डित आकाशजी शास्त्री हीरापुर, **खड़ैरी :** पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन, **शहपुर (बुरहानपुर) :** पण्डित शुभमजी शास्त्री डासाला, **गढाकोटा :** पण्डित निर्मलजी एटा (एड.), पण्डित अनर्घ्यजी शास्त्री विदिशा, **द्रोणगिरि :** पण्डित अजितजी मड़ावरा, पण्डित प्रशांतजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित रोहितजी शास्त्री मड़देवरा, **शुजालपुर मण्डी :** पण्डित आयुषजी शास्त्री गौरझामर, **बाकल :** पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी, **गंधवानी (धार) :** पण्डित नीलेशजी शास्त्री उदयपुर, **पोरसा :** पण्डित अक्षतजी शास्त्री चित्तौड़गढ, **रांझी (जबलपुर) :** पण्डित समर्थजी शास्त्री, **उभेगांव :** पण्डित संयमजी शास्त्री देशमाने, **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित चेतनप्रकाशजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी, **महिदपुर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री ध्रुवधाम, **ग्वालियर (फालका बाजार) :** पण्डित रमनजी शास्त्री मौ, **रौन :** पण्डित कपिलजी शास्त्री खड़ैरी, **राघौगढ :** पण्डित चन्दूभाई कुशलगढ, पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित निष्कर्षजी शास्त्री जयपुर, **सागर (तारण-तरण) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, पण्डित दीपकजी शास्त्री बमनपुरा, **अमायन :** पण्डित पलजी शास्त्री गांधीनगर, **टिमरनी :** पण्डित भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा।

महाराष्ट्र

मुहूद : पण्डित शैलेषजी शास्त्री परभणी, **अकलूज :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री खड़ैरी, **मलकापुर :** पण्डित पदमजी अजमेरा इन्दौर, **सांगली :** पण्डित नमनजी शास्त्री खनियांधाना, **सेलू :** पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी, **चिखली :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री भिण्ड, **डासाला :** पण्डित सम्मेदजी शास्त्री, **देवलगांवराजा :** पण्डित सिद्धांतजी शास्त्री, **अनसिंग :** पण्डित जीवराजजी, **मोहोल :** पण्डित वैभवजी शास्त्री, **कुर्डुवाडी :** पण्डित आकाशजी शास्त्री, **बालचंद नगर :** पण्डित विकासजी शास्त्री मुम्बई, **शिरपुर :** पण्डित जगदीशनजी शास्त्री चेन्नई, **गेवराई :** पण्डित फूलचंदजी मुक्किवार, **मालशिरस :** पण्डित संयमजी शास्त्री देशमाने, **विहिगांव :** पण्डित सुमेशजी शास्त्री, **कलंब :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, **अहमदनगर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री अमरमऊ, **मुम्बई (मलाड) :** पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, **मुम्बई (भायन्दर) :** ब्र. निखिल भैया, **बोधेगांव :** पण्डित चिन्मयजी मांगुलकर काटोल, **रामटेक :** पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी।

उत्तरप्रदेश

बनारस : पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा, **ललितपुर (शीतलनाथ जिनालय) :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **करहल :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री सिवनी, **कुरावली :** पण्डित वैभवजी शास्त्री ग्वालियर, **बांदा :** पण्डित सचिनजी शास्त्री भोपाल, **सुल्तानपुर :** पण्डित सजलजी शास्त्री आरोन, **मैनपुरी :** पण्डित अरुणजी शास्त्री सागर व पण्डित प्रांजलजी शास्त्री प्रतापगढ, **शिकोहाबाद :** पण्डित प्रियांशजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, **जसवंतनगर :** पण्डित दुर्लभजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी, **भोगांव :** ब्र. रविजी ललितपुर, **इटावा (डांडा) :** पण्डित मयंकजी शास्त्री लखनादौन।

राजस्थान

जयपुर (टोडरमल स्मारक) : पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल व पण्डित गौरवजी शास्त्री, **जयपुर (आदर्श नगर) :** पण्डित महावीरजी शास्त्री उदयपुर, **बूंदी :** पण्डित विमलजी लाखेरी, **भीलवाड़ा :** पण्डित विकासजी बानपुर, **भिंडर :** पण्डित पदमजी कोटा, **लूणदा :** पण्डित सम्भवजी शास्त्री दिल्ली, **कुशलगढ :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री नयागांव व पण्डित नमनजी शास्त्री भरतपुर, **पीसांगन :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन व पण्डित केयूरजी शास्त्री, **लकड़वास :** पण्डित निखिलजी शास्त्री फिरोजाबाद,

वल्लभनगर : पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सागर, **चित्तौड़गढ (कुंभानगर) :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **जयथल :** पण्डित शुभमजी शास्त्री मझगुंवा, **रावतभाटा :** पण्डित अनुरागजी शास्त्री पटेरा, **बनियानी :** पण्डित अंकितजी शास्त्री गढाकोटा, **शाश्वतधाम (उदयपुर) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, **थानागाजी :** पण्डित धर्मचन्दजी जयथल।

अन्य

सनावद प्रचार एवं प्रवचन : ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित रजनीभाई दोशी, **ढाईद्वीप प्रचार एवं प्रवचन :** पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई व पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, **ठाकुरगंज :** पण्डित नीशूजी शास्त्री मड़देवरा, **यमुना नगर :** पण्डित सहजजी शास्त्री पिड़ावा, **लुधियाना :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री बमनौरा।

गुजरात

तलोद : पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई, **ओढव (अहमदाबाद) :** पण्डित सुरेन्द्रजी पंकज छिन्दवाड़ा, **दाहोद :** पण्डित स्वप्निलजी भोपाल, **सोनगढ (विद्यार्थीगृह) :** पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित आतमजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित प्रियमजी शास्त्री बड़ामलहरा, **अहमदाबाद (अमराईवाडी) :** पण्डित उदयमणिजी शास्त्री।

दिल्ली

विश्वासनगर : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ, **आत्मसाधना केन्द्र :** पण्डित अजितजी अचल, पण्डित सम्मेदजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री, **शिवाजी पार्क :** पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, **छतरपुर :** डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, **बिनौली :** पण्डित अशोकजी उज्जैन, **मन्टोला पहाड़गंज :** पण्डित देवांशुजी शास्त्री बण्डा, **वेदवाड़ा :** पण्डित सूरजजी शास्त्री काले, **साहिबाबाद :** पण्डित आदित्यजी शास्त्री पिड़ावा, **उत्तमनगर :** पण्डित रवीन्द्रजी मड़देवरा, **नांगली डेरी :** पण्डित प्रासुकजी शास्त्री, **पाण्डवनगर :** पण्डित एकांशजी शास्त्री खड़ैरी, **विकासपुरी :** पण्डित गौरवजी शास्त्री बण्डा, **जनकपुरी (बी-1) :** पण्डित दर्शनजी शास्त्री बलेह, **बदरपुर :** पण्डित प्रांजलजी शास्त्री भोपाल, **बसंतकुंज :** पण्डित अंकुरजी पिड़ावा, **रोहिणी (सेक्टर-13) :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री बड़ामलहरा, **रोहिणी (से.-5) :** पण्डित संयमजी शास्त्री घुवारा, पण्डित समकितजी शास्त्री दलपतपुर, **छपरौली :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री, पण्डित नमनजी शास्त्री, **खेकड़ा :** ब्र. पुष्पाजी, ब्र. ज्ञानधारा जी उज्जैन, **गोहाना :** पण्डित विनम्रजी शास्त्री बड़ागांव, **बड़ौत :** पण्डित सुमितजी शास्त्री बड़ौत, **दिल्ली कैंट :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री देवराहा, **नांगलोई :** पण्डित शिखरजी शास्त्री पिड़ावा, **राजाबाजार :** पण्डित अनुरागजी शास्त्री बिनौली, **राजेन्द्र नगर :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, **सरस्वती विहार :** पण्डित समकितजी शास्त्री बकस्वाहा, **मौजपुर :** पण्डित आकाशजी शास्त्री ध्रुवधाम, **हरिद्वार :** पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री व पण्डित प्रतीकजी शास्त्री, **पटपड़गंज :** पण्डित समकितजी शास्त्री बागपत, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री, **त्रिनगर :** पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, **मॉडल टाउन :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आंजना, **शंकरनगर :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री, **दरियागंज :** पण्डित संजीवजी शास्त्री उस्मानपुर, **बहादुरगढ :** पण्डित विशेषजी शास्त्री कन्नपुर, **लक्ष्मीनगर :** पण्डित धरणेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित विनयजी जैन, **श्रेणिक फार्म :** पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, विदुषी श्रेयाजी गाला मुम्बई।

पुरस्कार वितरण व सम्मान समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 42वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 4 अगस्त को रात्रि में 8 बजे श्री वीतराग-विज्ञान मुक्त विद्यापीठ द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला के सभी अध्यापकों एवं श्रेष्ठ विद्यार्थियों को सम्मानित व पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने की। इसके अतिरिक्त अन्य विद्वत्गण व गणमान्य अतिथियों का पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा तिलक व माल्यार्पणकर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर आकाशजी शास्त्री, अमायन द्वारा प्रथम बैच की संपूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी अर्हं अध्यापकों की प्रशंसाकर उत्साहवर्धन किया। डॉ. भारिल्ल एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित नमनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री विदिशा, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा, पण्डित संयमजी देशमाने, पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज, पण्डित पलजी शास्त्री गांधीनगर, पण्डित शाश्वतजी शास्त्री भोपाल, कुमारी स्वस्ति सेठी जयपुर आदि उपस्थित अध्यापकों को प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मानित किया।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा परीक्षा परिणाम की घोषणा की गई तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों ने डॉ. भारिल्ल द्वारा विशेष पदक एवं डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रमाण-पत्र ग्रहण किये। अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अध्यक्षीय उद्बोधन में अर्हं पाठशाला के उद्देश्य '**महावीर के संदेशों को घर-घर तक पहुंचाएंगे**' को सफल बताया और पुरस्कार प्राप्त छात्रों और सम्मानित अध्यापकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अनेकान्तजी शास्त्री ने एवं सफल संचालन अर्हं पाठशाला की चीफ एक्जीक्यूटिव विदुषी प्रतीति पाटील ने किया। आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया एवं विशेष सहयोग अर्पितजी शास्त्री का रहा।

ज्ञातव्य है कि 11 मार्च से प्रारम्भ अर्हं पाठशाला के प्रथम सत्र में भारत के अतिरिक्त अमेरिका, इटली, अफ्रीका, दुबई, सिंगापुर, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि 14 देशों के 741 छात्रों ने जैनधर्म मूलभूत सिद्धांतों का अध्ययन किया।

क्या है अर्हं पाठशाला? - श्री वीतराग-विज्ञान मुक्त विद्यापीठ द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला ऑनलाईन कक्षाएं हैं, जिसमें आप जूम एप द्वारा घर बैठे जैनधर्म का अध्ययन कर सकते हैं। बेसिक, इंटरमीडिएट व हायर वर्ग में विभाजित ये कक्षाएं हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, अंग्रेजी आदि छः भाषाओं में संचालित हैं। सप्ताह में दो दिन ppt द्वारा कक्षा एवं प्रतिमाह विद्वानों द्वारा विशेष विषय पर दो सेमिनार तथा अन्य रोचक एक्टिविटीज होती हैं। ये कक्षाएं हर आयुवर्ग के लोगों को आकर्षित कर रही हैं।

अर्हं पाठशाला से जुड़ने हेतु अभी संपर्क करें - 8058890377

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा

विश्व की अद्वितीय रचना

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में आयोजित

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान एवं भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव

शुक्रवार, दिनांक 1 नवम्बर से रविवार, 3 नवम्बर, 2019 तक

इस महामहोत्सव में जैनदर्शन के विश्वप्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, गोष्ठी आदि के द्वारा लाभ प्राप्त होगा। विधि-विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के निर्देशन में संपन्न होंगे।

अतः आपको सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

निवेदक

अजितप्रसाद जैन, दिल्ली (अध्यक्ष) | डॉ.हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर (कार्याध्यक्ष) | श्रीमती सोनल मुकेश जैन, इन्दौर (महामंत्री)

एवं समस्त ट्रस्टीगण, तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन

संपर्क सूत्र - अशोक शास्त्री (9584372443), आवास विभाग - 9893304432

परमागम ऑनर्स की विशेष संगोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 42वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 10 अगस्त को विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा व्यवहाराभास का स्वरूप, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा उभयाभास का स्वरूप, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि की अवस्था, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा निश्चयाभास का स्वरूप एवं विदुषी स्वानुभूति जैन द्वारा निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग का स्वरूप विषय पर व्याख्यान का लाभ मिला। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ज्ञानी के जीवन में निश्चय और व्यवहार मोक्षमार्ग का समन्वय विषय पर उद्बोधन प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का संचालन विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com